International Journal of Research Radicals in Multidisciplinary Fields (IJRRMF), ISSN: 2960-043X
Volume 2, Issue 1, January-June, 2023, Available online at: www.researchradicals.com

जम्मू–कश्मीर में आतंकवादी समस्या का भारतवर्ष पर प्रभाव : एक समीक्षा

शीतल

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

सन्दर्भ

जब से देश स्वतंत्र हुआ है उसी समय से कश्मीर की समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् कश्मीर समस्या को लेकर तीन युद्ध हो चुके हैं तथा इस के फलस्वरूप 'आतंकवाद' में कई गुणा वृद्धि हो चुकी है। यह आतंकवाद केवल भारत वर्ष तक सीमित नहीं है, अपितु इसके पंख पूरे विश्व में फैल चुके है। आतंकवाद के लिए कोई विशेष विचार धारा अथवा धर्म उत्तरदायी नहीं रहा है। विश्व में आतंकवाद का मुद्दा एक चिंतन का विषय है। इसका कारण कोई भी रहा हो, चाहे वो आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक या फिर नस्लीय, परन्तु इसका विशेष कारण इन से उत्पन्न हुए 'कट्टरपंथी' विचारधारा ही है।

कुंजी शब्द : कश्मीर समस्या, आतंकवाद, विपरीत प्रभाव, सीमावर्ती क्षेत्र, रणनीति, प्रभाव, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, प्रदर्शन, पलायन, असंतोष।

आतंकवाद

किसी स्पष्ट उद्देश्य के लिए जानबूझ कर की गई हिंसा। आतंकवाद जिसे घोरअपराध की संज्ञा दी गई है, जिसका उद्देश्य आम लोगों के दिलों में आतंकवाद का भयउत्पन्न करना है। आतंकवाद कोई नई बात नहीं है और यह इतिहास की शुरूआत के बाद सेप्रयोग किया गया है, भले ही यह परिमापित करने के लिए अपेक्षाकृत कठिन हो सकता है।आतंकवाद में एक प्रकार का प्राकृतिक रूप से आतंकवाद की भावना को कूट–कूट कर भर दिया जाता है। आतंकवादियों की रणनीति स्थानीय जनता, सरकार और उसके कारण केलिए दुनिया का ध्यान खींचना है, कि हिंसक कृत्य करने के लिए है। आतंकवाद, आतंकवादविरोधी उपायों और राजनीतिक विफलता के लिए अनुकूल करने की क्षमताओं की वृद्धि काप्रदान किया है।

परिचय

भारत के सामने आतंकवाद एक ऐसी समस्या है जो लगातार भारत की विकासशीलनीति को प्रभावित करती है और सबसे अधिक भारत के उत्तर में कश्मीर में भारत की आजादीके साथ ही लगातार आतंकवादी घटनाएं हो रही है, जिनका समाधान करने में नेहरू से लेकरमनमोहन सरकार ने भरसक प्रयास किए, परन्तु यह समस्या ज्यों की त्यों बनी रही औरलगातार बढ़ती ही जा रही है। आतंकवाद एक विश्वस्तर की समस्या है और सौ सालों सेविश्व को प्रभावित कर रही है। 'आतंकवाद' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम फ्रांस की क्रांति के समयप्रयोग किया गया था। आतंकवाद भी एक तरीका है, व्यवस्था का विरोध करने का या उससेसंघर्ष करने का, आतंकवाद के लिए विशेष विचारधारा या विशेष धर्म जिम्मेदार नहीं है, बल्कियह तो राजनीतिक बदलाव या असंतुष्ट होने पर प्रयोग किया जाता है, इसलिए विश्व स्तरपर आतंकवाद एक गंभीर समस्या है, व सारा विश्व इसको लेकर चिंतित है।

यद्यपि इसकेलिए राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, नैतिक, सामाजिक मूल्य आदि जिम्मेदार हो सकते हैं।आतंकवाद के पनपने की प्रक्रिया को विश्लेषणात्मक रूप से वर्णन किया गया है। आतंकवादका मुख्य कारण जम्मू–कश्मीर में रहने वाले मुसलमानों की कट्टरवादिता है, जिसके कारणविभिन्न बातचीत होने पर भी इस विषय पर आज तक पूर्ण सहमति नहीं बन सकी। जम्मू औरकश्मीर के राज्यपाल के रूप में जनरल सिन्हा ने कई वर्ष कश्मीर में व्यतीत किए, परन्तु वहाँके नेताओं व आम लोगों की पृथक्–पृथक राय ने केवल दिव्यता का ही आभास रहा और बातकिसी भी निष्कर्ष पर नहीं पहुँची।

यदि हम आतंकवाद का सिंहावलोकन करे तो हम पाएंगे कि देश स्वतन्त्र होते हीकश्मीर में कबालियों का युद्ध हो गया और बाद में दो युद्ध और भी हुए, जिसके फलस्वरूप'बंगलादेश' बना और कालांतर में 1999 में पाकिस्तानी सेना ने भारतीय चौंकियों पर कब्जाजमा लिया जिसके फलस्वरूप सैनिकों और अधिकारियों ने अपने प्राणों की आहूति देकर,पाक–अधिकृत जमीन भारतीय सेना का कब्जा हुआ। इसी बीच कई शिखर वार्ता भी हुई,परन्तु इस मुद्दे पर दोनों देशों के बीच पूर्ण सहमति कभी नहीं बन सकी।

आतंकवाद को बढ़ावा देने में आंतरिक तथा बाह्य कारकों का मिलाजुला योगदान है।प्रथम तो यहाँ के नेता जो अलगाववादी नेता है, 'जिहाद' के नाम पर युवाओं को गुमराह करतेहैं तथा अपना निजी स्वार्थ सिद्ध करने के लिए दूसरों को बलि का बकरा बनाते है, दूसरेउग्रवादियों को धन उपलब्ध करवाने का कार्य भी इन अलगाववादी नेताओं द्वारा ही कियाजाता रहा है। आतंकवाद को लेकर चाहे व राजनीतिज्ञ हो या पत्रकार या फिर अन्य नेता,सभी ने इस की घोर निंदा की है। इस आतंकवाद का कब अंत होगा, इस बात का निकटभविष्य में तो कोई हल दिखाई नहीं देता। इस चिर स्थाई 'राष्ट्रीय रोग' का भारत केजनमानस, आर्थिक, सामाजिक, औद्योगिक, सामाजिक ताने–बाने पर क्या विपरीत प्रभाव पड़ाहै। जिसके फलस्वरूप कश्मीर की अर्थव्यवस्था चरमरा चुकी है। इस संदर्भ में आतंकवाद सेजनित प्रत्यक्ष तथा परोक्ष प्रभाव को जानना भी अत्यन्त आवश्यक है। इसके अतिरिक्तआतंकवाद के निकटतम प्रभाव तथा दूरगामी प्रभावों का सप्रसंग व्याख्या करना भी अत्यन्तआवश्यक है। इन प्रभावों का एक–एक करके उल्लेख इस प्रकार करेंगे।

आर्थिक प्रभाव

आतंकवाद का प्रभाव आर्थिक रूप से भी पड़ रहा है, जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था कोनिरंतर दुर्बल कर रहा है। जम्मू–कश्मीर में स्थाई शांति स्थापित करने के लिए प्रतिवर्ष केन्द्रव राज्य सरकार द्वारा खर्च किया जाता रहा है। पिछली सरकार (UPA) ने कश्मीर को60,000 करोड़ रुपये का अनुदान दिया जो विकास कार्यों के अतिरिक्त, अविस्थापित कश्मीरियोंके लिए एक राहतकोष के रूप में दिया गया। इसके अतिरिक्त समय–समय पर राज्य सरकारइन 'आतंकवाद' से पीड़ित लोगों के लिए अनुदान कर्ज व अन्य सेवाओं के रूप में देती रहतीहै, जो कि एक अनुउत्पादक व्यय (Unproductive Expenditure) ही है। इस व्यय का भारआम व्यक्ति पर ही पड़ता है।

कश्मीर के पर्यटन उद्योग एवं बागवानी पर आतंकवाद का दुष्प्रभाव

पर्यटन उद्योग, कश्मीर की आर्थिक रीढ़ की हड्डी है। सदियों से कश्मीर राज्य कीअर्थव्यवस्था देश–विदेश से कश्मीर आने वाले पर्यटकों पर ही निर्भर करती है। प्राचीन कालसे ही कश्मीर, प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रतीक रहा है। डल झील, निशांत बाग, गुलमर्ग, शालीमारबाग, सोनमर्ग, परीमहल, आदि पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षण के केन्द्र रहे है। घाटी में कईदशकों से 'आतंकवाद' की घटनाओं में वृद्धि होने के कारण, देशी व विदेशी पर्यटकों कीसंख्या बहुत घट चुकी है। पर्यटन उद्योग पर चलने वाले होटल, हस्तकला, कश्मीरी मेवे तथाडल झील में 'शिकारों' पर निर्भर 'पर्यटन उद्योग लगभग समाप्त हो चुका है। एक अनुमान केअनुसार घाटी का 80 प्रतिशत तक 'पर्यटन उद्योग' लगभग समाप्त हो चुका है। जहाँ परोक्षरूप से पर्यटन उद्योग से लाखों की संख्या में कश्मीरियों को रोजगार भी मिलता था। वहाँइस उद्योग से जुड़े हुए लोगों को आज बड़ी बेरोजगारी का सामना करना पड़ रहा है। यहसब बढ़ते हुए 'आतंकवाद' का ही परिणाम है।

राजनैतिक प्रभाव

कश्मीर के कई नेता स्वतंत्र देश के सत्ताधीश बनने के स्वप्न देखने का कारणपाकिस्तान की कठपुतली बनकर काम कर रहे है। जम्मू–कश्मीर राज्य की भौगोलिक औरसामरिक स्थिति ऐसी है कि इससे सारे एशिया महाद्वीप पर निगरानी रखी जा सकती है।पाकिस्तान जम्मू–कश्मीर के इस्लामिक नेताओं को मूर्ख बनाकर यहाँ अपना एक सैनिकअड्डा स्थापित करना चाहते है ताकि उभरती हुई भारत की शक्ति दुर्बल हो जाए। खाड़ीदेशों से न केवल आतंकी आते है, बल्कि कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियों को जारी रखने केलिए धन भी उपलब्ध करवाया जाता है। वर्तमान समय में इस प्रकार से आतंकवादियों को धनउपलब्ध

करने के आरोपों में गिलानी व उसके बेटों को भी वर्तमान में हिरासत में लिया गयाहै। इन नेताओं ने हवाला के माध्यम से कश्मीर के नाम पर सउदी अरब, ईराक, पाकिस्तान,ब्रिटेन और अमेरिका से धन एकत्रित किया जाता रहा है। यह सब कश्मीर में फैल रहेआतंकवाद का ही परिणाम है, जो कश्मीर में शांति स्थापित करने में बहुत बड़ा कारक सिद्धहो रहा है। जम्मू की हिन्दू बहुल जनसंख्या को असंतुलित करने के लिए एक व्यापक षड्यन्त्ररचा गया है, जिसके अंतर्गत कश्मीर, डोडा, राजौरी, पुंछ से योजनाबद्ध ढंग से मुसलमानआकर बस रहे है। ये सभी मुसलमान वास्तव में तो आंतकवाद के समर्थक है, परन्तु कश्मीरसे आतंकवाद का बहाना बनाकर जम्मू में स्थाई रूप से बसकर मुस्लिम समुदाय की जनसंख्यामें व्यापक वृद्धि की है जो आतंकवाद का परोक्ष रूप के परिणाम का एक उदाहरण है। इसकेलिए राजनैतिक संरक्षण भी प्राप्त है, जो जम्मू क्षेत्र में शांति बनाए रखने में एक बड़ी कठिनाईउत्पन्न करने का कार्य कर रहा है।

सामाजिक प्रभाव
अशांति का माहौल

आतंकवाद के कारण हड़ताल, कर्फ्यू, नारेबाजी, काला दिवस व अन्य राष्ट्र विरोधीगतिविधियों में व्यापक वृद्धि होना। कश्मीर में व्यापक तौर पर आतंकवाद पनपने से घाटी मेंअराजकता का वातावरण बनता जा रहा है, जिसके फलस्वरूप समाज को अपनी बातों औरकार्यक्रमों से अवगत करवाने तथा साथ चलाने के लिए आतंकवादी संगठनों द्वारा 'पत्र'निकालकर उनमें भ्रामक सामग्री प्रकाशित की जाती रही है जो कश्मीरी मुस्लिम नागरिकों कापथ–भ्रष्ट करने में सहायक सिद्ध हुई है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय दिवस पर नागरिक कर्फ्यू, एक काला दिवस के रूप में मनाया जाता रहा है। इसके अतिरिक्त गणतंत्र दिवस को भीकाला दिवस के रूप में मनाना घाटी में एक आम बात बन चुकी है।

काला दिवस मनाने के साथ–साथ घाटी में आये दिन हड़तालों व बंदों का आयोजनकरना एक आम बात बन चुकी है। जब कभी भी कश्मीर घाटी में सेना की मुठभेड़ में कोईआतंकवादी मारा जाता है तो उस आतंकवादी को शहीद बताकर उसकी श्रद्धांजलि देने केलिए हड़ताल का आयोजन कर सेना का विरोध कर पत्थरबाजी एवं बंद इत्यादि का आयोजनकिया जाता है। कुछ कट्टरपंथी मुसलमान स्वेच्छा से कुछ आतंकवादियों के दबाव में आकरइन गतिविधियों में शामिल हुए है।

आतंकवाद एवं देश विरोधी प्रदर्शन

आतंकवाद के प्रभाव में आकर कई संगठन जैसे जमात–ए–इस्लामिया औरआतंकवादियों ने कुछ मुस्लिम समाज के कुछ लोगों को मजहब के नाम पर गुमराह कियाऔर एक 'दबाव समूह' बना कर देशविरोधी प्रदर्शन में शामिल होने को मजबूर किया गया।इस मजहबी जनून के कारण हिन्दू समाज भयाक्रांत हो गया। उनके ऊपर लगे देशद्रोह केआरोप एवं निर्दोषों की हत्या के सभी अपराध क्षमा कर दिये गए और शब्बीर शाह जैसे नेताको जम्मू की जेल से रिहा कर दिया गया और बाद में अलगाववादी नारों से कश्मीर घाटी मेंकई बार प्रदर्शन तथा देश–विरोधी गतिविधियों में प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप में ये नेता लिप्तदिखाई दिए। ये सभी गतिविधियां घाटी में पनपे आतंकवाद का ही दुष्प्रभाव है जो अस्सी केदशक में आरम्भ हुआ था और वर्तमान समय तक कई गुणा बढ़ चुका है।

धार्मिक प्रभाव
आतंकवाद एवं हिन्दू कश्मीरियों का पलायन

कश्मीर में पनपे आतंकवाद एवं हिन्दू कश्मीरियों का देश के अन्य भागों में पलायन,आतंकवाद का दूसरा बड़ा प्रभाव रहा है। वर्ष 1990 से कश्मीर से 5 लाख हिन्दुओं कापलायन आतंकवाद का ही दुष्परिणाम है। जम्मू जैसे छोटे शहर में इन विस्थापितों कीजनसंख्या लाखों में हो गई। सभी धर्मशालाएं, मंदिरों के आंगन, बस अड्डा तथा अस्थाईतम्बूओं में इस पलायनकर्ता जनसंख्या को बसाया गया। इसके अतिरिक्त दिल्ली में

भी लाखोंकी संख्या में इन विस्थापितों को बसाया गया। यह सब बढ़ते हुए आतंकवाद का ही दुष्परिणाम है।

अतः यह स्पष्ट है कि कश्मीर में आतंकवाद के पनपने से कश्मीर में सामाजिक,आर्थिक, धार्मिक तथा सामरिक दृष्टि से व्यापक विपरीत प्रभाव पड़ा है।

निष्कर्ष

कश्मीर में कुछ ऐसी ऋणात्मक अलगाववादी की शक्तियाँ उभरी, जिस के अंतर्गतकश्मीर में 'आतंकवाद' उभरा, जिसके फलस्वरूप इन का कश्मीरी जन–जीवन, वहाँ कीआर्थिक अवस्था, उद्योग और सामाजिक संतुलन पर व्यापक तौर पर विपरीत प्रभाव पड़ा।इसके अतिरिक्त कश्मीर से हिन्दू जनसंख्या का जम्मू और देश के अन्य राज्यों में व्यापक स्तरपर पलायन हुआ, जिसके फलस्वरूप केन्द्र और राज्य सरकारों पर उन पुनः विवस्थापित कोबसाने के लिए करोड़ों रुपये जो अनउत्पादिक खर्च था, करने पर विवश होना पड़ा।आतंकवाद से ग्रस्त इस जनसंख्या को बहुत त्रासदी झेलनी पड़ी है, जिसकी क्षतिपूर्ति होनी बड़ी कठिन है। इसके अतिरिक्त इस आतंकवाद के कारण ही भारत–पाक सम्बन्ध निरन्तर बिगड़ते ही चले गए। इस निरन्तर तनाव के कारण भारत–पाक व्यापार लगभग ठप्प हो चुकाहै। भारत–पाक फिल्मी कलाकारों को भी इस 'आतंकवाद' का दंश झेलना पड़ा तथा व्यापारवातावरण को विपरीत दिशा व दशा का सामना करना पड़ा। इस आतंकवाद के कारण हीपिछले कई दशकों से सेना व पुलिस को अपने जवान और अधिकारियों को खोना पड़ा। अतःयह स्पष्ट है कि कश्मीर में आतंकवाद के पनपने से सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथासामरिक दृष्टि से व्यापक रूप से भारत पर विपरीत प्रभाव पड़ा है, जो एक गंभीर चिन्तन काविषय है। इन विपरीत परिस्थितियों को देखते हुए कश्मीर समस्या का कोई स्थायी हल ढूंढनाअत्यंत आवश्यक है ताकि इस भारतीय उपमहाद्वीप में पूर्णतया शांति स्थापित की जा सके।

संदर्भ (References)

- प्रफूल्ला, केटकर (2004), दक्षिणी एशिया में आतंकवाद : भारत का दृष्टिकोण, इण्डिया शोध प्रेस, दिल्ली।
- Prafulla Ketkar, (2005), Indian Perfection on Terrorism, India Research Press, Delhi.
- रविन्द्र जुगरान (2009), रक्त–रंजित जम्मू–कश्मीर, ज्ञानगंगा प्रकाशक, दिल्ली।
- एस॰के॰ सिन्हा, (2010), मिशन कश्मीर, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
- उर्मिलेश, (2005), कश्मीर : विरासत और सियासत, गंगा प्रकाशन, नई दिल्ली।
- Manoj Joshi (2016, The Lost Rebellion : Kashmir in the Nineties, PenguinPublishers, New Delhi.
- ममता राजावत, (2016), कश्मीर–आतंकवाद की परछाई, अनमोल पब्लिकेशन, दिल्ली।
- रैना, एस॰के॰, (2007), कश्मीर आतंकवाद : उत्पत्ति एवं वृद्धि : एक विश्लेषण, online: www.boloji.com.
- एस॰के॰ सिन्हा, (2010), मिशन कश्मीर, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।

रिपोर्टस

- कश्मीर का सच और भारत में आतंकवाद
- भारत विश्व का सबसे आतंकवाद से ग्रस्त देश रहा है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की आतंकवाद पर रिपोर्ट चन्द्रकांत पांजे द्वारा दी गई रिपोर्ट।
- शंकरशरण (2009) जिहादी आतंकवाद, प्रकाशन राजपाल एंड सन्ज, कश्मीरीगेट, दिल्ली।
- ललित वत्स (2000) कारगिल, कश्मीर और पाकिस्तान, प्रकाशक किताबघर, नईदिल्ली।

- Peer Giyas-ud-din (1992) Understanding The Kashmiri Insurgency, JaykayBook House, Residency Road, Jammu Tavi.
- R.S. Verma (1994) Jammu and Kashmir: At the Political Crossroads, VikisPublishing House Pvt. Ltd.